मेरे नाथ !

' सत्संगके फूल ' पुस्तक से –

(स्वामी श्री रामसुखदासजी महाराज के स्वामी श्री शरणानन्दजी के प्रति विचार)

श्रीशरणानन्दजी महाराज नये दार्शनिक थे। उनका दर्शन छहों दर्शनोंसे निराला है। उनकी बातको कोई काट नहीं सकता, जबकि अन्य दर्शनोंकी बातें एक-दुसरेको काटती हैं। परन्तु लोगोंने श्रीशरणानन्दजी महाराजकी बातोंको कितना आदर दिया ? सच्ची जिज्ञासा नहीं हैं। (page – 31)

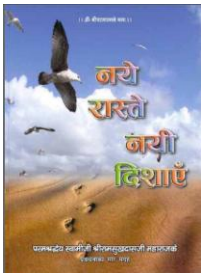

' नये रास्ते नयी दिशाएँ ' पुस्तक से –

(स्वामी श्री रामसुखदासजी महाराज के स्वामी श्री शरणानन्दजी के प्रति विचार)

आचार्योंके मुख्य छः मत हैं — शंकराचार्यका अद्वैतवाद, रामानुजाचार्यका विशिष्टाद्वैतवाद, मध्वाचार्यका द्वैतवाद, निम्बार्काचार्यका द्वैताद्वैतवाद, वल्लभाचार्यका शुद्धाद्वैतवाद और चैतन्यमहाप्रभुका अचिन्त्यभेदाभेदवाद | एक शरणानन्दजीका मत है, जो सब आचार्योंसे निराला है और बहुत जल्दी कल्याण करनेवाला है ! शरणानन्दजीकी सूझ विलक्षण है ! सबका जो परिणाम है, वह परिणाम उन्होंने पकड़ा है !

श्रोता – निष्कामभावमें जैसे श्री..... आचार्य हैं, ऐसे शरणानन्दजी महाराजके विषयमें आप लय कहेंगे ?

स्वामीजी – कहनेमें संकोच होता है, पर वे सबसे आगे हैं ! खुद शरणानन्दजीने कहा है कि मैं क्रान्तिकारी संन्यासी हूँ ; मेरी पुस्तक पढ़नेसे द्वैत, अद्वैत, विशिष्टाद्वैत, द्वैताद्वैत आदि सबमें खलबली मच जायगी ! उन्होंने किसी मत का खण्डन नहीं किया, पर सबका खण्डन हो गया ! उनकी बातोंसे बहुत जल्दी जीवका उद्धार हो सकता है | श्रवण-मनन-निदिध्यासनकी बिल्कुल जरूरत नहीं ! पर उनकी बातें, उनकी भाषा समझनी कठिन है | मेरी बातोंका मनन करे तो शरणानन्दजीकी बातें समझमें आ जायँगी |

मेरा कुछ नहीं है और मेरेको कुछ नहीं चाहिये – इन दो बातोंसे पूरा काम हो जायगा | श्रवण-मनन आदि सब इसके पेटमें आ गया ! (page – 11)

संसार भर के ग्रंथों में से स्वामी श्री रामसुखदास जी महाराज ने हमें स्वामी श्री शरणानन्द जी महाराज का अकाट्य, अद्वितीय "दर्शन" निकालकर दे दिया है - यह उनकी विलक्षण कृपा है !